कविताः विज्ञान साहित्य के घेरे में

आसमा सुभानी
गाजियाबाद

विज्ञान कहता है,
हर वो चीज,
जो सांस लेती है,
सजीव है,
और जब छोड़ देती है,
साँसें लेना,
तब हो जाती है मृत,

जैसे एक पेड़,
जब उसकी जड़ और पत्तियां,
साथ छोड़ देती हैं उसका,
तब हो जाता है वो मृत,
क्योंकि,
जड़ें पैदायशी रिश्ते हैं,
और पत्तियां दुनियावी रिश्ते,

ऐसे ही,
रिश्तों का ठुकराया हुआ,
इंसान भी, रह जाता है,
बस काष्ठ का एक टुकड़ा मात्र,

जिसको कुछ महसूस नहीं होता,
चाहे उसको चुभाई जाएं,
तानों की कितनी ही कीलें,
या काटा जाए आरी से,
वो उफ्फ तक नहीं करता,

चाहे उस पर घिसी जाएं रोटियां,
या फिर सीढ़ी बनाकर,
लोग कुचलते हुए ऊपर चढ़ जाएं,
वो खामोश रहता है,

शायद जब संभावनाएं मर जाती हैं,
तब भावनाएं मर जाती हैं,
और वो ठूंठ,
सांसें लेता हुआ, मृत होता है।।

राष्ट्रभाषा की अपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा।

–राजा राममोहन राय